3

''अच्छी शुरुआत मानो आधा काम पूरा हो गया है''

दार्शनिक अरस्तु (384-322 ई. पू.) ने कहावत लिखी थी ''अच्छी शुरुआत मानो आधा काम पूरा हो गया है।''[1] जीवन के कई कामों के विषय में यह बात बिल्कुल उपयुक्त है; प्रकाशितवाक्य के अध्ययन के विषय में तो यह दोगुना सही है। मुझे बताया गया है कि रॉकेट दागने पर उसके छूटने के स्थान पर कुछ डिग्री का मोड़ उसके उतरने वाले स्थान से सैकड़ों मील दूर जाने का कारण बन सकता है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की अध्ययन की सही शुरुआत करें तभी आप सही लक्ष्य पर पहुंचेंगे। गलत स्थिति से आर भ करेंगे, तो आप किसी बेतुके अनुमान पर पहुंचेंगे।

यह पाठ प्रकाशितवाक्य के अध्ययन में अपनाए जाने वाले हमारे ढंग के विषय में है। पृष्ठभूमि के लिए इससे महत्वपूर्ण कोई पाठ नहीं हो सकता। पुस्तक के अध्ययन के लिए अपनाया जाने वाला ढंग उस पुस्तक की लगभग हर बात की व्या या को प्रभावित करता है। इसलिए शुरुआत अच्छी होनी आवश्यक है।

बाइबल को मौखिक रूप से परमेश्वर की प्रेरणा से होने को मानने वाले लोग प्रकाशितवाक्य के लिए चार ढंग अपनाते हैं।[2] असं य भिन्नताएं तथा संयोग पाए जाते हैं, परन्तु मु य ढंग चार ही हैं। टीकाकार अपनी भिन्नताओं के लिए नये नामों के आविष्कार से बात को उलझा देते हैं, परन्तु यदि सभी नहीं तो अधिकतर ढंगों को चार मु य शीर्षकों में बांटा जा सकता है। मैं चार ढंगों की शक्ति तथा कमज़ोरियों की ओर ध्यान दिलाते हुए उनकी समीक्षा करूंगा। फिर, समाप्ति से पहले मैं इस शृंखला में इस्तेमाल किए गए ढंग की व्या या करूंगा।

प्रत्येक ढंग की पड़ताल करते हुए हमें प्रकाशितवाक्य की व्या या के लिए दो आवश्यक बातें ध्यान में रखनी आवश्यक हैं:

(1) *लिखे जाने के समय पुस्तक का महत्व था।* यीशु वे बातें प्रकट कर रहा था ''जिनका शीघ्र होना आवश्यक है'' (1:1)। यूहन्ना ने कहा, ''... समय निकट आया है''

(1:3)। पुस्तक कष्ट सह रहे मसीही लोगों के नाम, उन्हें शांति देने तथा विश्वासी बने रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए लिखी गई थी। इसलिए, अपने अध्ययन में हम बार-बार पूछेंगे, ''यदि प्रकाशितवाक्य की व्या या इस ढंग के अनुसार की जाती है, तो पहली सदी का सताव सहने वाले मसीही लोगों के लिए इसका क्या अर्थ होता?''

(2) *पुस्तक का अब के लिए महत्व है।* पुस्तक का विश्वव्यापी और सदा रहने वाला संदेश भी है: ''जो इस भविष्यवाणी के वचन को पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं और इसमें लिखी हुई बातों को मानते हैं'' (1:3) उन्हें धन्य कहा गया है। हर किसी से जिसके ''कान हैं'' सुनने का आग्रह किया गया है कि ''आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है'' (2:7)। पुस्तक के अन्त में, ''हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी की बातें सुनता है'' (22:18) विशेष चेतावनी दी गई है। इस कारण अध्ययन के हर भाग में, हमें पूछना आवश्यक है कि ''यदि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्या या इस ढंग से की जाती है, तो आज के समय में हम लोगों के लिए इसका क्या अर्थ है?''

भविष्यवादी ढंग

इस ढंग की परिभाषा

भविष्यवादी ढंग में माना जाता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अधिकतर भाग पुस्तक के लिखे जाने के समय दूर भविष्य में घटने वाली घटनाओं के बारे में बताता है।[3] इस ढंग में विशेष रूप से माना जाता है कि पुस्तक का अधिकतर भाग मसीह के द्वितीय आगमन[4] से तुरन्त पहले की घटनाएं हैं। इस विचार को कई बार ''युगांत विज्ञान'' का विचार कहा जाता है।[5]

भविष्यवादी विचार में कई भिन्नताएं हैं, परन्तु एक विचार जिसने कई वर्षों से मंच स भाला हुआ है, *प्रीमिलेनियलिज़्म* अर्थात हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा है। ''प्री'' का अर्थ है ''पूर्व या पहले'' और ''मिलेनियम'' एक हज़ार वर्ष के काल को कहा जाता है। यह शब्द इस विश्वास की ओर संकेत करता है कि यीशु अपने *हज़ार वर्ष* (मिलेनियल) के राज्य से *पूर्व* (प्री) वापस आएगा। विशेषकर, हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले अधिकतर लोगों का यह मानना है कि यीशु पृथ्वी पर एक हज़ार वर्ष तक यरूशलेम नगर से राज करने के लिए आएगा।[6] इस विचार के अनुसार, हज़ार वर्ष के बाद न्याय होगा, जिसमें लोगों को स्वर्ग या नरक में भेजा जाएगा।[7]

हमारा ध्यान मु यतया इस बात में है कि यह ढंग प्रकाशितवाक्य की व्या या को किस प्रकार प्रभावित करता है। हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा की बहुत सी बातें आपस में ही मेल नहीं खातीं हैं, परन्तु (कुछ भिन्नताओं के साथ) अधिकतर लोग इस पाठ के अन्त में चार्ट में दिखाई गई प्रकाशितावक्य की सामान्य रूपरेखा को ही मानते हैं (ध्यान दें कि इसे नकारने अर्थात यह संकेत देने के लिए कि यह गलत है, चार्ट में मैंने विकिरण रेखा खींची है।) चार्ट की समीक्षा आगे दी गई है। तिरछे किए गए पदों पर विशेष ध्यान दें, जो

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले (प्रीमिलेनियलिस्ट) के ढंग की रूपरेखा है।

''*यहूदियों द्वारा मसीह को ठुकराना।*'' हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले अधिकतर लोग यह सिखाते हैं कि यीशु पृथ्वी पर राज्य स्थापित करने के लिए आया, परन्तु वह कर नहीं पाया, क्योंकि यहूदियों ने उसे नकार दिया था। उनका मानना है कि इस कारण यीशु के राज्य की योजनाएं टाल दी गईं। चार्ट में से जाती मोटी, काली तिरछी रेखा (इस विचार के अनुसार) भविष्यवाणी से स बन्धित परमेश्वर की योजनाओं तथा उद्देश्य को दर्शाती है।

''*कलीसिया का युग।*'' उनका मानना है कि यीशु अपना राज्य स्थापित नहीं कर पाया, इसलिए राज्य स्थापित किए जाने तक उसने एक अस्थाई प्रबंध के रूप में कलीसिया बना दी (प्रीमिलेनियलिस्ट लोग आम तौर पर राज्य और कलीसिया में अन्तर करते हैं)। ''कलीसिया का युग'' शब्दों के ऊपर गोल रेखा इस विचार का संकेत देती है कि भविष्यवाणी से जुड़ी परमेश्वर की योजनाएं तथा उद्देश्य अस्थाई रूप से बाधित किए गए थे।

अध्याय 1-3: प्रीमिलेनियलिस्टों का मानना है कि प्रकाशितवाक्य के 1 से 3 अध्याय कलीसिया के अस्तित्व के लगभग दो हज़ार वर्ष के बारे में बताते हैं।[8]

''*यहूदियों द्वारा मसीह को स्वीकार करना।*'' वे भविष्यवाणी करते हैं कि वह समय आएगा, जब सब यहूदी यीशु को मसीहा मान लेंगे और परमेश्वर की ''भविष्यवाणी की उलटी गिनती'' बहाल हो जाएगी।

''*रैप्चर व क्लेश (7 वर्ष)।*'' उनका मानना है कि यहूदियों के स्वीकार करने का समय सात वर्ष के काल में होगा। विश्वासियों के लिए यह रैप्चर का समय होगा,[9] जो विश्वासियों के यीशु से बादलों में मिलने के लिए उठाए जाने से होगा। विश्वासियों के चले जाने के बाद, उनका कहना है कि पृथ्वी पर सात वर्ष के क्लेश का समय होगा। वे यीशु और उसके अनुयायियों को नीचे पृथ्वी पर हलचल मचने के समय बादलों में मंडराने की आशा करते हैं।

अध्याय 4-19: उनका मानना है कि प्रकाशितवाक्य के अध्याय 4 से 19 में सात वर्ष के इस समय का विवरण दिया गया है, जिसमें क्लेश के अधिकतर भाग (अध्याय 6 से 19) के बारे में भी बताया गया है।

''*पृथ्वी पर यीशु का राज्य (1,000 वर्ष)।*'' सात वर्ष बीत जाने पर, प्रीमिलेनियलिस्टों का कहना है कि यीशु पृथ्वी पर नीचे उतरेगा और अपने शत्रुओं को पराजित करके पृथ्वी पर राज करने लगेगा। उन्हें एक हज़ार वर्ष तक उसके यरूशलेम नगर से सांसारिक गद्दी पर बैठने की उ मीद है।

''*थोड़ा समय।*'' उनका मानना है कि हज़ार वर्ष के बाद समय का एक संक्षिप्त काल आएगा, जिसमें शैतान को एक शक्तिशाली सेना एकत्र करने की अनुमति दी जाएगी। इस ''थोड़े समय'' के अन्त में, यीशु शैतान और दुष्ट सेनाओं को एक बड़े युद्ध में हराएगा।

''न्याय।'' प्रीमिलेनियलिस्टों अर्थात हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों के अनुसार यीशु और शैतान के बीच युद्ध के बाद न्याय का दिन होगा।

अध्याय 20: उनका मानना है कि प्रकाशितवाक्य का अध्याय 20 हज़ार वर्ष के राज, ''थोड़े समय'' और न्याय के दिन के बारे में बताता है।

''अनन्तकाल।'' न्याय के दिन के बाद अनन्तकाल शुरू होगा, जिसमें धर्मियों को स्वर्ग में और अधर्मियों को नरक में रखा जाएगा।

अध्याय 21; 22: उनका मानना है कि प्रकाशितवाक्य के अध्याय 21 और 22 स्वर्ग के बारे में बताते हैं, जहां धर्मी लोग अनन्तकाल तक रहेंगे।

बाइबल की शिक्षा से परिचित लोगों को इस दृश्य में कई त्रुटियां मिल जाएंगी, परन्तु अभी के लिए हमारा ध्यान इस ढंग की खामियों पर है। इस पर विचार करें: जिन लोगों की बात की गई है, वे यह सिखाते हैं कि तीन अध्यायों में लगभग दो हज़ार वर्ष की बात बताई गई है *और सोलह अध्यायों में केवल सात वर्ष का विवरण है* तथा एक हज़ार वर्ष को एक से भी कम अध्याय में बता दिया गया है! अधिकतर प्रीमिलेनियलिस्टों के लिए, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कष्ट के सात वर्षों के दौरान पृथ्वी पर होने वाली उथल-पुथल की स्थितियों के बारे में है।

वर्षों से, भविष्यवादी विचार को फैलाने के लिए स्कॉफील्ड रैफरेंस बाइबल मु य स्रोत रहा है।[10] भविष्यवादी विचार के सबसे प्रसिद्ध विचारों में हाल लिंडसे का *द लेट ग्रेट प्लेनट अर्थ* रहा है।[11]

इस ढंग की ''शक्तियां''

भविष्यवादी विचार इतनी समस्याओं से घिरा है कि मैंने ''शक्तियां'' शब्द को उद्धरण चिह्नों में रख दिया है। यह एक प्रसिद्ध ढंग है, यानी यह बाइबल के अस्पष्ट पदों में आज की सुर्खियों में आनन्द ढूंढ़ने के जिज्ञासु लोगों को आकर्षित करता है। इस ढंग में आज के लिए संदेश भी है। जैसा कि युगों को बांटने वाले अधिकतर प्रचारक कहते हैं, उनका संदेश है, ''मन फिराओ! यीशु शीघ्र आ रहा है!''

भविष्यवादियों का मानना है कि उनके ढंग की शक्ति इस बात में है कि वे (उनके शब्दों में) ''प्रकाशितवाक्य को अक्षरश: लेते हैं।'' यह सही है कि वे पुस्तक के चुनिंदा भागों को हम में से अधिकतर लोगों से बढ़कर अक्षरश: लेते हैं; प्रकाशितवाक्य 20 अध्याय वाले ''हज़ार वर्ष'' का उत्कृष्ट उदाहरण है। परन्तु मेरा प्रश्न है कि किसी व्यक्ति द्वारा सांकेतिक भाषा की अक्षरश: व्या या करना इसकी सामर्थ का चिह्न है या यह इस बात का कि व्या या करने की उसकी कुशलता में कमी आ गई है? फिर, यह कि किसी को अपनी धर्मशास्त्रीय स्थिति सांकेतिक रूपक के आधार पर बनानी आवश्यक लगती है या उसकी कमज़ोर स्थिति का शक्ति का चिह्न है?

याद रखें कि अपोकलिप्टिक साहित्य की विशेष बात यह है कि यह *चिह्नों के माध्यम से* सिखाता है। किसी भी चिह्नात्मक भाषा की, चाहे वह सांकेतिक ही क्यों न हो, व्या या

करने की कुंजी उसे ''अक्षरश:'' लेकर नहीं, बल्कि *स्वाभाविक* अर्थ में लेकर होनी चाहिए- अन्य शब्दों में इसे चिह्नात्मक भाषा *के रूप में* ही लिया जाना चाहिए। यीशु ने कहा, ''मैं द्वार हूं'' (यूहन्ना 10:9), परन्तु हम उसकी इस बात को *अक्षरश: नहीं लेते।* हमारा यह विश्वास नहीं है कि यीशु किसी दरवाज़े की चौखट से लटका हुआ है, बल्कि हम उसके शब्दों को *स्वाभाविक* लेते हैं। हमें समझ है कि यीशु इस बात पर बल देने के लिए कि उद्धार में प्रवेश करने का एकमात्र माध्यम वही है, चिह्नात्मक भाषा का इस्तेमाल कर रहा था।

इस ढंग की कमज़ोरी

भविष्यवादी ढंग की एक कमज़ोरी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर इसका असंतुलित विचार है। किसी भी ढंग पर, जो यह घोषणा करता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सात वर्षों के काल के बारे में बताने के लिए लिखी गई है, संदेह करना आवश्यक है।

एक और कमज़ोरी इसका उस बात पर निर्भर रहना है, जिसे ब्रूस मैज़गर ने ''वुडन लिटरलिज़्म'' कहा है।[12] इस विचार को रेखांकित करने पर कि पुस्तक की सारी नहीं तो अधिकतर बातों को अक्षरश: न लिया जाए, वचन प्रतीकों के अर्थों की व्या या कर देता है (1:20; 4:5; 5:6, 8; 12:3, 9; 17:9, 12, 15, 18; 19:8; 20:14)।

इस ढंग की मु य कमज़ोरी यूहन्ना की उस बात से से मेल न खाना है कि जिन घटनाओं की भविष्यवाणी की गई थी वे शीघ्र घटने वाली थीं: ''यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य, जो उसे परमेश्वर ने इसलिए दिया कि अपने दासों को वे बातें, जिनका शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए'' (1:1)। ''अवश्य है'' शब्द *dei* का अनुवाद है, जो ''नैतिक आवश्यकता वाली अवैयक्तिक यूनानी क्रिया'' है।[13] यह दिखाते हुए कि ''अवश्य है कि मैं यरूशलेम को जाऊं ... और ... बहुत दु:ख उठाऊं'' (मत्ती 16:21) यीशु ने इसी शब्द का इस्तेमाल किया था। इसके अलावा, यूनानी शब्द के अनुवाद ''शीघ्र'' का अर्थ ''फुर्ती से'' या ''जल्दी'' है। तीमुथियुस को कहते हुए कि ''मेरे पास *शीघ्र* आने का प्रयत्न कर'' (2 तीमुथियुस 4:9) पौलुस ने इसी शब्द का इस्तेमाल किया था। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मु यतया भविष्य में हज़ारों वर्षों को बताने की घटनाएं नहीं लिखी गई थीं।

एक मु य कमज़ोरी यह है कि इस व्या या में पहली शताब्दी में सताए जाने वाले मसीहियों के लिए बहुत कम या कोई संदेश नहीं होगा। कल्पना करें कि आप भयंकर पीड़ा में हैं और आपका कोई मित्र कहता है, ''मैं समझ रहा हूं कि तुम परेशान हो और मैं तु हें बताना चाहता हूं कि *अब से हज़ारों वर्ष बाद,* परमेश्वर सब कुछ ठीक कर देगा!'' आपको इससे शांति मिलेगी या आप यह जवाब देने को तत्पर होंगे कि ''बहुत अच्छा, लेकिन मुझे सहायता की आवश्यकता तो *अभी* है''?

इस ढंग की भयंकर कमज़ोरी यह है कि इसकी मूल शिक्षाएं बाइबल की स्पष्ट शिक्षा से मेल नहीं खातीं। उदाहरण के लिए, इस ढंग में हमारे प्रभु के लहू से खरीदी गई कलीसिया को कम करके आंका जाता है (प्रेरितों 20:28)। बहुत से प्रीमिलेनियलिस्टों के

अनुसार, यदि यीशु को यहूदियों द्वारा रोका न जाता तो वह अपने ''पहले आगमन'' के समय पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित कर देता और कलीसिया बनाने की आवश्यकता ही न पड़ती।[14] यह सही नहीं हो सकता, क्योंकि कलीसिया परमेश्वर की सनातन मंशा का महत्वपूर्ण ाग थी (इफिसियों 3:10, 11, 21)।

इस शृंखला का उद्देश्य प्रीमिलेनियलिज़्म यानी हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा का खण्डन करना नहीं है,[15] परन्तु यह भी सच है कि प्रकाशितवाक्य के स बन्ध में अधिकतर अनुमान हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा के कारण ही हैं। इस और भविष्यवादी ढंग के कारण, जो इस पुस्तक के अधिक प्रसिद्ध ढंगों में से एक है, मैं बीच-बीच में अपने अध्ययन में प्रीमिलेनियम (हज़ार वर्ष के राज्य की) व्या या की कुछ कमज़ोरियों की ओर ध्यान दिलाता रहूंगा।

सतत-ऐतिहासिक ढंग

इस ढंग की परिभाषा

सतत-ऐतिहासिक ढंग का मानना यह है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पहली शताब्दी से लेकर संसार के अन्त तक इतिहास (विशेषकर कलीसिया के इतिहास) का खाका है।

> इस विचार को मानने वाले लोग प्रकाशितवाक्य को पिन्तेकुस्त से लेकर समय के अन्त तक कलीसिया की घटनाओं के सांकेतिक चित्र के रूप में देखते हैं। वे ... पुस्तक में बताए गए युद्धों (भ्रमणों का युद्ध), लहरों (मुह मदवाद के उदय, प्रोटेस्टेंट सुधारवाद), निजी व्यक्तियों (नेपोलियन, पोप, हिटलर) या घटनाओं (कॉन्स्टेंटाइन का सहने का आदेश) से जोड़ते हैं।[16]

इस ढंग को कालक्रम विचार, इतिहास की रूपरेखा और व्या या का ऐतिहासिक ढंग भी कहा गया है।[17]

सतत-ऐतिहासिक ढंग प्रोटेंस्टेंट लोगों में प्रसिद्ध रहा है। कुछ दशक पहले तक, इस विचार को अधिकतर प्रोटेस्टेंट टीकाकारों द्वारा माना जाता था। इसमें सामान्य रूप में रोमन कैथोलिकवाद पर और विशेषकर पोप की ओर उंगली उठाई जाती थी। इस ढंग की प्रभावशाली पुस्तकों में एल्बर्ट बार्न्स और एडम क्लार्क के टीका शामिल हैं।[18] जॉन टी. हिंडस ने प्रकाशितवाक्य पर अपने टीका में बार्न्स का ढंग अपनाया, जो नये नियम पर गॉस्पल एडवोकेट की शृंखला के प्रसिद्ध टीकाओं का भाग है।[19]

इस ढंग की शक्तियां

कैथोलिकवाद का विरोध करने वालों के लिए यह विचार विशेष आकर्षण है। यह देखना दिलचस्प है कि किस प्रकार टीकाकारों ने प्रकाशितवाक्य के दर्शनों के साथ पश्चिमी

यूरोप के इतिहास को मिलाते हुए समयसारिणी बनाई है। इस ढंग की एक शक्ति यह है कि इसमें आज के लिए संदेश है कि ''स पूर्ण इतिहास परमेश्वर के नियन्त्रण में है।'' आम तौर पर इस विश्वास में भविष्यवादी ढंग द्वारा बताए गए खतरे नहीं मिलते।

इस ढंग की कमज़ोरी

एक कमज़ोरी यह है कि यह ढंग बहुत हद तक अनुमानों पर आधारित और विषयात्मक है। टीकाकारों द्वारा कलीसिया के इतिहास की पहली कुछ सदियों में जाने से, व्या याओं में बहुत बड़ा अन्तर आ जाता है।[20] एक लेखक का मानना था कि एक दर्शन तो मार्टिन लूथर और सुधारवाद की ओर इशारा कर रहा था, जबकि किसी और ने इसे छापेखाने के आविष्कार के रूप में दिखाया।

इससे जुड़ी कमज़ोरी यह है कि टीकाकारों ने अनुमान में पश्चिमी यूरोप की घटनाओं तक केन्द्रित होकर उन अन्य स्थानों की उपेक्षा की है, जहां सुसमाचार पहुंचा है। निश्चय ही परमेश्वर को तो सारे जगत का ध्यान है।

एक दुखद कमज़ोरी यह है कि अधिकतर निरन्तर ऐतिहासिक टीकाकारों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले इस ढंग से यीशु के द्वितीय आगमन का समय ठहराने वाले लोग बहुत हो गए हैं। वे आम तौर पर ''एक दिन-एक वर्ष'' (प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के स बन्ध में एक अन्याय संगत मान्यता का) मानते हैं।[21] मसीह के आने का समय निर्धारित करने का प्रयास करने वाले बहुत से लोगों ने ''एक दिन एक वर्ष'' की अवधारणा का इस्तेमाल किया है। उनकी समयसारिणी के अनुसार यीशु का प्रकट न हो पाना उन्हें झूठे भविष्यवक्ताओं के रूप में दिखाता है। किसी भी मनुष्य को द्वितीय आगमन के समय की जानकारी नहीं है (मत्ती 24:36; 1 थिस्सलुनीकियों 5:4; 2 पतरस 3:10; प्रकाशितवाक्य 3:3; 16:15)।

एक ग भीर कमज़ोरी यह है कि सतत-ऐतिहासिक ढंग के अनुसार, प्रकाशितवाक्य का अधिकतर भाग पहली सदी से बहुत दूर की घटनाओं को बताता है। 1:1 में यूहन्ना ने कहा कि यह पुस्तक वे ''बातें, जिनका शीघ्र होना आवश्यक है'' के बारे में बताती है और 1:3 में उसने घोषणा की कि ''समय निकट है।''

इस ढंग की एक और कमज़ोरी आम तौर पर दर्शनों को एक के बाद एक युग के अन्त तक होने वाली घटनाओं के साथ क्रम में देखना है। इससे प्रकाशितवाक्य में कई जगह समस्याएं सामने आती हैं। उदाहरण के लिए पुस्तक के केन्द्र में, अध्याय 12 यीशु के जन्म के विषय में बताता है।[22]

एक कमज़ोरी यह है कि यदि यह व्या या सही होती, तो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पहली सदी के सताए जाने वाले मसीही लोगों के लिए बहुत कम शांति थी। यह पुस्तक उनके लिए ऐसी पहेली होती जो हल नहीं हो सकती। भविष्य के इतिहास की भविष्यवाणियां नकारने के योग्य होने के बावजूद, इसका तुरन्त लाभ उन्हें बहुत कम मिलता। किसी मसीही का सिर कलम होने से पहले यह बताने की कल्पना करें, ''कलीसिया विश्वास से फिर जाएगी, परन्तु विश्वासी लोग अन्त में विजयी होंगे।'' क्या ऐसे समाचार से उसे अपने

जल्लादों के सामने दृढ़ बने रहने की सामर्थ मिलती ?

इस ढंग की भयंकर गलती वह दोष है, जिससे इसका विश्वव्यापी आकर्षण कम हुआ कि हमें नहीं मालूम कि मसीह का आना कब होगा। बहुत से सतत-ऐतिहासिक टीकाकार पुस्तक की अन्तिम घटनाओं को अपने ही समय में रखते हैं; वरना, बहुत से दर्शनों की व्या या नहीं की जा सकेगी। इसका अर्थ यह है कि उनकी समयसारिणी को इतिहास में नई और महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ दोहराते रहना आवश्यक है। इस पर विचार करें: यदि मसीह अगले चार हज़ार वर्ष तक न आए तो क्या होगा? इसका अर्थ यह होगा कि प्रकाशितवाक्य का केवल एक तिहाई भाग ही पूरा हुआ है और इस पुस्तक के दो तिहाई भाग के बारे में हम अभी भी अंधकार में हैं।

इस बात के लिए मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि इस विचार को मानने वालों के ध्यान में कैथोलिकवाद की गलतियां थीं, परन्तु बाइबल में उन गलतियों को दिखाने के लिए इससे बेहतर आयतें हैं। प्रकाशितवाक्य का मु य उद्देश्य ''हमें याजकाई के युद्ध के हथियारों से लैस करना'' नहीं,[23] बल्कि सताए हुओं को शांति देना है।

अतिवादी ढंग

इस ढंग की परिभाषा

तीसरे ढंग को आम तौर पर अतिवादी ढंग कहा जाता है। ''अतिवादी'' एक लातीनी शब्द से निकला है, जिसका अर्थ ''के पार'' या ''अतीत'' है।[24] प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के स बन्ध में, अतिवादी ढंग विचार में माना जाता है कि पुस्तक का (सारा नहीं) तो अधिकतर भाग यह बताता है कि कलीसिया की आरि भक शताब्दियों में या यूं कहें कि *हमारे अतीत में क्या हुआ।*

अतिवादी ढंग का एक उग्र रूप यह सिखाता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक विशेषकर उन घटनाओं के बारे में बात करती है, जो इसके लिखे जाने के समय अतीत में पहले ही हुईं (या कम से कम उसके शीघ्र बाद घटीं): मसीहा का आना, कलीसिया की स्थापना और यरूशलेम का विनाश इसके उदाहरण हैं। इस विचार के अनुसार, प्रकाशितवाक्य मसीह में परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति की समीक्षा है। इसलिए इसे समीक्षा का ढंग भी कहा गया है। फोय ई. वालेस जूनियर इस विचार का मज़बूत पक्ष लेने वाले थे।[25] इसकी कुछ बातें अच्छी हैं, परन्तु परमेश्वर को उस जानकारी को, जिसे पहले से अधिकतर मसीही लोग जानते थे केवल समीक्षा के लिए ऐसे अजीब ढंग (अपोकलिप्टिक संकेतवाद) का इस्तेमाल करने की क्या आवश्यकता थी ?

इस निष्कर्ष से ''70 ईस्वी की शिक्षा'' की वकालत करने वालों द्वारा कुछ निष्कर्ष दिए गए हैं।[26] इस भ्रमित शिक्षा ने संसार के कई भागों में कलीसियाओं में गड़बड़ की है।

आगे की गई टिप्पणियां उत्कृष्ट अतिवादी ढंग के लिए हैं, जिसे समकालीन इतिहास की समीक्षा भी कहा गया है। प्रकाशितवाक्य पर जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स के टीका में सुधरा हुआ अतिवादी ढंग इस्तेमाल किया गया है।[27]

इस ढंग की शक्तियां

इस ढंग की एक शक्ति यह है कि यह ठोस रूप से पहली शताब्दी की ऐतिहासिक स्थिति पर आधारित है। बाइबल की बहुत सी किताबों की हमारी समझ, उस समय के इतिहास का कुछ ज्ञान होने से, जिसमें वे लिखी गई थीं और बढ़ जाती है। इस ढंग की एक शक्ति यह भी है कि इसमें पहली शताब्दी के मसीही लोगों के लिए जबर्दस्त संदेश है: ''ऐसा लग सकता है कि रोमी साम्राज्य अजेय है, परन्तु नियन्त्रण परमेश्वर का ही है। अन्त में, रोम का नाश हो जाएगा और विजय आप की ही होगी!''

इस ढंग की कमज़ोरियां

कठोर शब्दों में, अतिवादी ढंग कहता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की हर बात रोमी साम्राज्य के समय में पूरी हो गई थी। यह प्रकाशितवाक्य को ''पहली शताब्दी के लिए लिखी गई एक पत्रिका से थोड़ा अधिक बना देगा।''[28] ऐसे विचार में दो कमज़ोरियां स्पष्ट हैं। पहली, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में आज के लिए एक सीमित संदेश ही होता। दूसरा, ऐसा विचार पुस्तक की ''अन्तिम बातों'' की स्पष्ट शिक्षा की अनदेखी करता है।

भविष्यवादी ढंग के विपरीत, प्रकाशितवाक्य का अतिवादी ढंग कहीं और दी गई स्पष्ट आयतों का उल्लंघन नहीं करता। अतिवादी ढंग में स्वयं आप में सतत-ऐतिहासिक ढंग वाली कमज़ोरी नहीं है: इसलिए इसे समय-समय पर संशोधित किए जाने की आवश्यकता नहीं है। इसके बारे में इतना ही सराहनीय है, पुरन्त आज के पाठकों के लिए उपयोगी होने के लिए इसमें कुछ सुधार की आवश्यकता है।[29]

चिह्नात्मक ढंग

इस ढंग की परिभाषा

चिह्नात्मक ढंग को इतिहास के दर्शन का ढंग, नाटकीय ढंग, आदर्शवादी ढंग, भविष्यवाणी के सिद्धांत का ढंग, आत्मिक पाठशाला, समय रहित अवधारणा जैसे कई नामों से पुकारा जाता है। मैं ''चिह्नात्मक ढंग'' शब्द का इस्तेमाल करता हूं, क्योंकि इस ढंग को जब मैंने पहली बार सुना तो इसके लिए इसी शब्द का इस्तेमाल होता था। अधिकतर लेखक इस ढंग को चिह्नात्मक विचार या इतिहास के दर्शन की पाठशाला कहते हैं।

चिह्नात्मक ढंग विचार यह है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हर युग में भलाई और बुराई के झगड़े अर्थात उस झगड़े की सांकेतिक बात करती है, जिसमें अन्ततः विजय भलाई की ही होगी। कहीं न कहीं यह प्रकाशितवाक्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अरुचि रखता है और पुस्तक की घटनाओं, लोगों या स्थानों को पहचानने के लिए बहुत कम या नाममात्र प्रयास करता है। इस ढंग में इस बात पर जोर दिया जाता है कि दर्शनों का उद्देश्य विवरण देना ही नहीं है।

मूलतः यह ढंग मैंने 1956 में अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज में फ्रैंक पैक से सीखा था,

जिससे प्रकाशितवाक्य के प्रति मेरा मोह बढ़ा। पाठ का हमारा भाग विलियम हैंड्रिक्सन की *मोर दैन कंकरर्स* से था।[30] हैंड्रिक्सन का ढंग सुधरा हुआ चिह्नात्मक ढंग है।[31] जो पूरी तरह से ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को नकारता नहीं है।[32] इसी ढंग के कारण मेरे एक छात्र ने लिखा है, ''मैं तो अब प्रकाशितवाक्य से प्रेम करने वाला बन गया हूं।''

इस ढंग की शक्तियां

सांकेतिक ढंग व्या या के सभी ढंगों से ''कम खतरनाक'' है। अन्य कुछ विचारों की अपेक्षा यह हवा में तीर मारने से दूर रहता है। इसके अलावा यह समयहीन सिद्धांतों पर ध्यान लगाता है, जिस कारण यह सबसे व्यावहारिक ढंग है। किसी को प्रकाशितवाक्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का पता हो या नहीं तौ भी इसमें पहली सदी हो या आज की सदी, दोनों के लिए महत्वपूर्ण संदेश है: ''प्रभु राज करता है! प्रभु में दृढ़ बनो! विजय उसी की होगी है!''

इस ढंग की कमज़ोरियां

उत्कृष्ट सांकेतिक ढंग की बड़ी कमज़ोरी प्रकाशितवाक्य के लिखे जाने के समय आत्मिक और राजनैतिक स्थिति पर बल दिया जाना है। इसकी मूल अवधारणाओं से आशीषित होने के लिए हमें पुस्तक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होना आवश्यक नहीं है, परन्तु प्रकाशितवाक्य को पढ़ते और इसका अध्ययन करते हुए, इस निष्कर्ष से इसमें स्पष्ट ऐतिहासिक हवाले हैं, बचना कठिन है। उदाहरण के लिए, अध्याय 17 वाली वेश्या, ''वह बड़ा नगर है, जो पृथ्वी के राजाओं पर राज करता है'' (आयत 18) और जो सात पहाड़ों पर बैठी है (आयत 9)। यह स्पष्टतया रोम के विषय में कहा गया लगता है, जो सात पहाड़ों पर बसा था। इसलिए सांकेतिक ढंग के कुछ सुधार सही लगते हैं।

स्पष्टतया फ्रैंक पैक इसी निष्कर्ष पर पहुंचे थे। 1956 में प्रकाशितवाक्य पर उनकी कक्षा में हमने सांकेतिक ढंग पर ध्यान किया था। नौ साल बाद प्रकाशितवाक्य पर टीका लिखने के समय उन्होंने अपने इस विश्वास पर बल दिया कि ''पुस्तक की जड़ें दृढ़ता से अपने समय में हैं'' और उन्होंने अतिवादी को ''इसे पहली शताब्दी की पृष्ठभूमि के विपरीत देखना आवश्यक'' बताया था।[33]

''समझदारी से चुनने'' का ढंग

मैंने पांचवां ढंग नहीं जोड़ा, बल्कि हर मूल ढंग की अपनी शक्तियां और कमज़ोरियां होने के कारण सबसे अच्छा तरीका कई ढंगों के बेहतरीन पहलुओं को चुनना है, इसलिए मैं एक अन्तिम सुझाव दे रहा हूं। लियोन मौरिस जैसे आधुनिक टीकाकारों[34] ने इसी ढंग को अपनाया है।[35] इस ढंग का एक उदाहरण मेरे पसंदीदा टीकाओं में से एक रेअ समर्स की *वरदी इज़ द लैंब* में मिल सकता है। समर्स मूलत: एक अतिवादी है, परन्तु वह आज के लिए प्रासंगिकता की आवश्यकता को देखता है, सो उसने आज के प्रभाव को जोड़ते हुए

सांकेतिक ढंग के तत्वों का इस्तेमाल किया है। वह अपने मिले-जुले ढंग को ''ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाला ढंग'' कहता है।[36] इसे ''अतिवादी/सांकेतिक विचार'' (अन्य शब्दों में, सांकेतिक की अपेक्षा अतिवादी पर अधिक ज़ोर देने का ढंग कहा जा सकता है)।

अपने अध्ययन में हम किस ढंग का इस्तेमाल करेंगे? मेरा मानना है कि किसी भी स्थान या शैक्षणिक पृष्ठभूमि के बावजूद सब लोगों को सांकेतिक ढंग देना अधिक उचित रहेगा। तौ भी मुझे लगता है कि पुस्तक को समझने में सहायता के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की कुछ जानकारी सहायक हो सकती है। इसलिए मैं ''सांकेतिक/अतिवादी विचार'' के मिले-जुले ढंग (अन्य शब्दों में, अतिवादी की अपेक्षा सांकेतिक पर अधिक बल देने का ढंग) का सुझाव देता हूं।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अध्ययन जारी रखते हुए आप इस पुस्तक को समझने का अपना ढंग भी बना सकते हैं। ऐसा करने पर मेरा सुझाव है कि आप सांकेतिक और अतिवादी ढंगों पर अधिक निर्भर रहें, भविष्यवादी ढंग से बचें और सतत-ऐतिहासिक ढंग में अपनाए जाने वाले समय तय करने के खतरों को पहचानें।

यदि आप ''समझदारी से चुनने का ढंग'' के लिए कोई शीर्षक चाहते हैं तो अधिक उचित यही होगा कि आप ''उदारवादी'' या ''समझौतावादी'' शब्दों का इस्तेमाल करें, परन्तु 2 तीमुथियुस 2:15 ''सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाने'' की चुनौती को मानने के ग भीर प्रयास के रूप में इस पर विचार करना अच्छा लगता है।

सारांश

यदि आपने किसी मित्र के साथ प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर चर्चा का कभी प्रयास किया है, तो हो सकता है कि आपको उससे संवाद न कर पाने के कारण परेशानी हुई हो। पुस्तक के लिए अलग-अलग ढंगों का इस्तेमाल करने पर ऐसा हो सकता है। दो लोगों में एक के पास अंग्रेज़ी शब्दकोष और दूसरे के पास जर्मन भाषा का शब्दकोष होने पर ''cat'' के शब्द जोड़ पर बहस जैसी स्थिति ही है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर दो लोगों के लाभदायक चर्चा करने से पहले, ढंग का प्रश्न सुलझा लिया जाना *चाहिए।* इस पाठ से आप अभिभूत हो सकते हैं। (जब मैंने बुधवार शाम के बाइबल अध्ययन में यह पाठ बताया था, तो एक नये मसीही ने आकर मुझ से कहा था, ''भाई डेविड, आप ने मुझे घुमा दिया!'') यह समझ आने तक कि हम मु यतया सांकेतिक ढंग का इस्तेमाल *क्यों* कर रहे हैं तब तक इसे बार-बार पढ़ते रहें, पढ़ते रहें।

जिन ढंगों का अध्ययन हमने किया है, उनकी अन्तिम समीक्षा करनी उचित रहेगी: आश्चर्य की बात है कि चारों ढंगों का मूल निष्कर्ष एक ही है: ''सब-कुछ कहने और करने के बाद, यदि हम परमेश्वर के विश्वासी रहें, *तो जय पाएंगे।*'' इस सच्चाई को पूरी शक्ति से थामे रखें!

टिप्पणियां

[1]अरिस्टोटल *पॉलिटिक्स* अंक 4. [2]जो लोग प्रकाशितवाक्य को परमेश्वर की प्रेरणा से दी हुई नहीं मानते वे इस पुस्तक के अध्ययन में अपने ढंग अपनाते हैं: अधिकतर तो इसे पहली शताब्दी की समस्याओं का चित्रण बताते हैं, जिसका उसके बाद कोई उपयोग नहीं है। कुछ का दावा है कि प्रकाशितवाक्य किसी अज्ञात लेखक द्वारा बाद की सदी में लिखी गई। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* के अधिकतर पाठक मौखिक प्रेरणा में विश्वास करते हैं इसलिए हम विश्वासी लोगों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले चार ढंगों पर ही विचार करेंगे। [3]वास्तव में भविष्यवादी शिक्षा देने वाले *आज भी* सिखाते हैं कि प्रकाशितवाक्य में अधिकतर भविष्य की *ही* घटनाएं हैं। [4]प्रकाशितवाक्य में मसीह के ''आगमन'' को प्राय: मनुष्यों और इस जीवन में जातियों के अस्थाई न्याय के अर्थ में लेने के कारण लोगों को ''द्वितीय आगमन'' शब्द उलझाने वाला लगता है। उन्हें ''मसीह के *अन्तिम* आगमन'' का शब्द पसन्द है, परन्तु ''द्वितीय आगमन'' को आम तौर पर प्रेरितों 1:11 में बताए गए अवसर के स बन्ध में सब लोग मानते हैं। इसलिए मैं इस शृंखला में इसका इस्तेमाल मसीह के अन्तिम आगमन के लिए ही करूंगा, जिसमें विश्वासियों को प्रतिफल और दुष्टों को दण्ड दिया जाएगा। [5]प्रत्येक ढंग पर चर्चा करते हुए मैं वैकल्पिक शीर्षकों की सूची दूंगा। यह उन लोगों की सहायता के लिए है, जिन्होंने पढ़ते समय इन शब्दों को देखा है। ''युगांत विज्ञान'' ''अन्तिम बातों का अध्ययन'' है। भविष्यवादी ढंग को कई बार ''युग के अन्त की शिक्षा'' कहा जाता है। क्योंकि इसमें यह माना जाता है कि प्रकाशितवाक्य का अधिकतर भाग इस युग के अन्त की घटनाओं से स बन्धित है। [6]प्रीमिलेनियमलिज़्म के इस प्रकार को ''युगों की शिक्षा'' कहा जाता है। हज़ार वर्ष के राज्य अर्थात प्रीमिलेनियम की शिक्षा देने वाले आज के अधिकतर लोग युगों की शिक्षा ही देते हैं। [7]कई प्रीमिलेनियलिस्ट यह सिखाते हैं कि अन्तिम न्याय केवल दुष्टों का ही होगा। [8]कई प्रीमिलेनियस्ट यह सिखाते हैं कि सात कलीसियाएं कलीसिया के सात युगों को कहा गया है। और प्रीमिलेनियलिस्टों का यह मानना है कि सात कलीसियाएं वास्तव में प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय अस्तित्व में थीं और वे उस समय और आज की कलीसियाओं से मेल खाती थीं। [9]''रैप्चर'' शब्द लातीनी भाषा से लिया गया है और इसका अर्थ ''उठाए जाना'' है। हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले इस शब्द का इस्तेमाल संज्ञा और क्रिया दोनों के रूप में करते हैं: वे कहते हैं कि यीशु अपने लोगों को ''रैप्चर'' करेगा (अर्थात उन्हें उठा लेगा) और वे उसके साथ उठा लिए जाएंगे। [10]सी. आई. स्कोफील्ड, *द होली बाइबल: स्कोफील्ड रैफरेंस एडिशन* (न्यू यॉर्क: ऑक्सफोर्ड, 1917; न्यू एडिशन, 1967). प्रत्येक ढंग पर चर्चा करते समय मैं उस ढंग का इस्तेमाल करने वाले कुछ स्रोतों की सूची दूंगा।

[11]हाल लिंडसे, *द लेट ग्रेट प्लैनट अर्थ* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1970). [12]ब्रूस एम. मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: अबिंगडन प्रैस, 1993), 11. [13]रैअ समर्स, *वरदी इज़ द लै ब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 32. [14]इसका अर्थ यह भी है कि यीशु क्रूस पर नहीं मरा होगा, परन्तु यीशु के लहू के बिना हमारा उद्धार नहीं हो सकता! [15]हज़ार वर्ष के राज्य के विषय पर अतिरिक्त जानकारी बाद में दी जाएगी। [16]जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोक्लिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 19. [17]इस ढंग को इतिहास के दर्शन के विचार या समकालीन इतिहास के विचार से न उलझाया जाए, जो इस पाठ में आगे बताए गए ढंगों के वैकल्पिक पदनाम हैं। [18]एल्बर्ट बार्नस, *नोट्स, एक्सप्लेनेटरी एण्ड प्रैक्टिकल, ऑन द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (लंदन: नाइट एण्ड सन, 1852); एडम क्लार्क, *द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 2, *रोमन्स टू द रैवलेशंस* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, तिथि नहीं)। [19]जॉन टी. हिंड्स, *ए कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (नैशविल्ले: पृष्ठ नहीं, 1937; रीप्रिंट, नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1973)। [20]यद्यपि प्रोटेस्टेंट लोगों द्वारा इस ढंग का इस्तेमाल व्यापक रूप में किया जाता है, कुछ कैथोलिक टीकाओं में भी यह ''साबित'' करने के लिए कि प्रोटेस्टेंड सुधार प्रकाशितवाक्य वाला ''पशु'' ही था, इसका इस्तेमाल किया है।

[21]''एक दिन=एक वर्ष'' की अवधारणा कुछ एक पदों में मिल सकती है, परन्तु भविष्यवाणी के अधिकतर साहित्य में नहीं। (उदाहरण के लिए, देखें यशायाह 7:8; यिर्मयाह 29:10; दानिय्येल 9:24; मत्ती

20:19.) प्रकाशितवाक्य में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि इस विचार को पुस्तक में लागू किया जाना चाहिए। (यदि ''एक दिन=एक वर्ष'' तो प्रकाशितवाक्य 20:4 का अर्थ होगा कि मसीह 3,60,000 वर्ष तक राज करेगा!) इसके अलावा अपोकलिप्टिक साहित्य में आम तौर पर ऐसा संकेत नहीं कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ऐसे विचार को इस्तेमाल किया जाना चाहिए। [22]इस पुस्तक में आगे अध्याय 12 पर टिप्पणियां देखें। [23]समर्स, 38. [24]मैं आपको नहीं बता सकता कि विद्वान लोग लातीनी शब्द का इस्तेमाल क्यों करते हैं, जबकि अन्य ढंगों में वे ऐसा नहीं करते; विद्वता की ऐसी ही विशेषताएं हैं। [25]फोय ई. वालेस जूनियर, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (फोर्ट वर्थ, टैक्सस: फोय ई. वालेस जूनियर पब्लिकेशंज़, 1966)। [26]''70 ईस्वी की शिक्षा'' का सार यह है कि द्वितीय आगमन 70 ईस्वी में हो चुका था, जब यरूशलेम का विनाश हुआ था। [27]रॉबर्ट्स, 16. [28]हैरोल्ड हेज़लिप, *द लॉर्ड रेअंस: ए सर्वे ऑफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (अबिलेन, टैक्सस: हैरल्ड ऑफ़ ट्रुथ, तिथि नहीं), द्व1. [29]अतिवादी होने का दावा करने वाले अधिकतर लोगों ने कुछ हद तक प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अपने ढंग में सुधार *कर लिया* है। उदाहरण के लिए अधिकतर का यह मानना है कि कुछ अन्तिम अध्याय न्याय के दिन की और अनन्तकाल की बात करते हैं। कुछ हद तक वे ''कठोर'' अतिवादी नहीं हैं। [30]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954)।

[31]इस प्रमाण के लिए कि हैंड्रिक्सन सांकेतिक पाठशाला से है, उसकी पुस्तक के पृष्ठ 56 पर उसका उपसर्ग 6 देखें। [32]हैंड्रिक्सन की पुस्तक के अध्याय 6 का शीर्षक ''द अपोकलिप्स रूटड इन कंटेपरेनियुस सरकमस्टांस'स'' से आर भ होता है। [33]फ्रैंक पैक, *रैवलेशन,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 16. [34]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन पब्लिशिंग कं., 1987)। [35]जैसा कि पहले कहा गया है, हैंड्रिक्सन, पैक, और रॉबर्ट्स ने कई ढंगों की खूबियों को मिला लिया। [36]समर्स, 45. इसी ढंग के लिए इस्तेमाल होने वाला एक और शब्द ''ऐतिहासिक भविष्यवाणी'' का है।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. इस पाठ के पहले भाग में दी गई प्रकाशितवाक्य की व्या या की मु य बातें क्या हैं?
2. पाठ के अनुसार, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के कितने मु य ढंग हैं?
3. हमने पहले किस ढंग का अध्ययन किया था? इसकी परिभाषा दें।
4. कई वर्षों से इस ढंग की सबसे प्रसिद्ध भिन्नता क्या है? शब्द की परिभाषा दें।
5. पहले ढंग की कुछ ''शक्तियां'' और कमज़ोरियां बताएं।
6. हमने जिस दूसरे ढंग का अध्ययन किया था, वह क्या है? इसकी परिभाषा दें।
7. दूसरे ढंग की कुछ शक्तियां और कमज़ोरियां बताएं।
8. तीसरे ढंग का जिसका हमने अध्ययन किया वह क्या था? इसकी परिभाषा दें।
9. तीसरे ढंग की कुछ शक्तियां और कमज़ोरियां बताएं।
10. चौथा ढंग जिसका हमने अध्ययन किया, वह क्या था? इसकी परिभाषा बताएं।
11. चौथे ढंग के कुछ और नाम क्या हैं?
12. चौथे ढंग की कुछ शक्तियां और कमज़ोरियां बताएं।
13. क्या चौथा ढंग विस्तृत विवरण का अधिक ध्यान रखता है या पूरी तस्वीर का?
14. इस शृंखला में हम ढंगों के किस मेल का इस्तेमाल करेंगे?

कई प्रीमिलेनियलिस्टों द्वारा सुझाई जाने वाली प्रकाशितवाक्य की रूपरेखा